DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
समास
Part -7
LIVE
23-07-2024 05:00 PM

# समास प्रकरणम्

## समास परिचय

समास शब्द की व्युत्पति:

सम् √अस् + घञ् = समास: शब्द बनता है।

'समास' शब्द का अर्थ है:

- 'समसनम्' इति समास: अर्थात् संक्षेपीकरण को ही समास कहते हैं।

- परस्परम् 'अन्वितानां' पदानां समसनम् एकीभवनं समासः अर्थात् दो या दो से अधिक पदों का विभक्ति रहित एक पद बनना ही समास है।

- अनेकस्य पदस्य एकपदीभवनं समासः इत्यर्थः अर्थात् अनेक पदों का बनना समास है।

विभक्तिलुप्यते यत्र तदर्थस्तु प्रतीयते।

पदानां चैकपद्यं च समासः सोऽभिधीयते ।।

अर्थात् जहाँ विभक्तियों का लोप हो जाता है; परन्तु उनका अर्थ प्रतीत होता रहता है और अनेक पद मिलकर एक पद बन जाता है, उसे समास कहते हैं।

जैसे-

दशरथस्य पुत्रः = दशरथपुत्रः

पीतम् अम्बर यस्य सः = पीताम्बरम्

इस प्रकार समास का अर्थ हो जाता है कि संक्षेपण। अर्थात् दो या दो से अधिक पदों में प्रयुक्त विभक्तियों, समुच्चय बोधक 'च' आदि को हटाकर एक पद बनाना।

## समास में प्रयुक्त शब्दावली

**पूर्व पदः** समास में प्रयुक्त दो पदों में से पहला पद (शब्द) पूर्व पद होता है। जैसे- 'राज्ञः पुरुषः' यहाँ पूर्व पद 'राज्ञः' है।

**उत्तर पदः** समास में प्रयुक्त दो पदों में से दूसरा पद (शब्द) उत्तर पद होता है। जैसे– 'राज्ञः पुरुषः' यहाँ उत्तर पद 'पुरुषः' है।

**विग्रहः** "वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः' समास के अर्थ को बतलाने वाला वाक्य 'विग्रह' कहा जाता है। यह व्यस्त पद भी कहलाता है। जैसे- 'पीताम्बरः' इस सामासिक पद का अर्थ बताने के लिए "पीतम् अम्बरं यस्य सः" वाक्य ही विग्रह कहा जाता है। समास विग्रह **दो प्रकार** का होता है

(i) लौकिक विग्रह

(ii) अलौकिक विग्रह।

**(i) लौकिक विग्रह:** लोक व्यवहार के समझने लायक विग्रह वाक्य को 'लौकिक विग्रह' कहते हैं। जैसे- 'दशरथपुत्रः' इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह: दशरथस्य पुत्रः होगा।

**(ii) अलौकिक विग्रह:** जो व्याकरणशास्त्र की प्रक्रिया दर्शाने हेतु प्रत्यादि का उल्लेख करके जो विग्रह होता है, उसे 'अलौकिक विग्रह' कहते हैं। जैसे 'दशरथपुत्रः' सामासिक पद का अलौकिक विग्रह 'दशरथ ङस् पुत्र सु' होगा।

**समस्त पद या सामासिक पदः** समास से युक्त पद को 'समस्तपद' या 'सामासिक पद' कहते हैं। जैसे अधिगोपम्, चन्द्रशेखरः, त्रिभुवनम्, रामकृष्णौ आदि ये समस्तपद या सामासिकपद कहें जायेंगे।

## समास के भेद

"लघुसिद्धान्तकौमदी" के लेखक वरदराज ने समास के पाँच प्रकार बताये हैं: 'समासः पञ्चधा'

1. केवल समास
2. अव्ययीभाव समास
3. तत्पुरुष समासः कर्मधारयः द्विगु
4. द्वन्द्व समास
5. बहुव्रीहि समास

किन्तु NCERT की पाठ्यपुस्तकों के अनुसार पदों की प्रधानता के आधार पर समास के मुख्यतः चार भेद होते हैं:

1. अव्ययीभाव
2. तत्पुरुष
3. द्वन्द्व
4. बहुव्रीहि

जबकि तत्पुरुष के दो उपभेद भी हैं- कर्मधारय एवं द्विगु।

## अव्ययीभाव समास

'पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः' अर्थात् प्रायसः जिस समास में. पूर्व पद का अर्थ प्रधान या मुख्य हो, वहाँ अव्ययीभाव समास होता हैं। इस समास में प्रायः पूर्व पद अव्यय ही होता है।)

'अनव्ययम् अव्ययः सम्पद्यते इति अव्ययीभावः' अर्थात् जो समस्त पद बनने से पहले तो अव्यय नहीं था, किन्तु समास होते ही अव्यय बन जाता है, वही अव्ययीभाव समास होता है।

अव्ययीभाव समास होने पर सामासिक पद अव्यय बन जाता है तथा समस्त पद नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयोग किया जाता है।

जैसे- बलम् अनतिक्रम्य यथावलम्

यहाँ बलम् शब्द अव्यय नहीं है किन्तु यथा इस अव्यय के साथ समास होकर 'यथाबलम्' यह पूरा पद अव्यय हो गया और नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयुक्त हो जाता है।

## विशेष:

- इस समास में पहला पद अव्यय होता है, अव्यय में उपसर्ग, निपात शामिल है। जैसे अधिहरि यहाँ 'अधि' उपसर्ग है। पहला पद अव्यय है अतः सम्पूर्ण पद में अव्ययीभाव समास है।
- अकारान्त (अ स्वर अन्त में) और आकारान्त (आ स्वर अन्त में) वाले शब्द होने पर 'सु' के स्थान पर 'अम्' हो जाता है अर्थात् अन्त में अम् जोड़ा जाता है। जैसे कृष्णस्य समीपम् उपकृष्णम्।

- इकारान्त, उकारान्त तथा हलन्त (व्यञ्जनान्त) शब्दों से प्रायः विभक्ति का लोप होता है। जैसे हरि शब्दस्य प्रकाशः इतिहरि।
- यदि समस्त पद बनाते समय अन्त में ई, ऊ, ॠ (दीर्घ स्वर) हो तो उन्हें ह्रस्व स्वर (इ, ऊ, ॠ) करके समस्त पद बनाया जाता है। जैसे उपनदि नद्याः समीपम्।

## अव्ययीभाव समास करने के नियम

सूत्रः- 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्धि-अर्थाभाव-अत्यय-असम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्-यथा-अनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्य-अन्तवचनेषु' (2/1/6)

वृत्तिः विभक्त्यर्थादिषु वर्तमानमव्ययं सुबन्तेन सह नित्यं समस्यते सोऽव्ययीभावः।

**सूत्रार्थः** - विभक्ति, समीप, समृद्धि, व्यृद्धि, अर्थाभाव, अत्यन्त (नष्ट होना), असम्प्रति (अब युक्त न होना), शब्दप्रादुर्भाव (शब्द का प्रकट होना), पश्चात्, आनुपूर्व्य (क्रमशः), यौगपद्य (एक साथ होना), सादृश्य (समान), सम्पत्ति, साकल्य (सम्पूर्णता) और अन्त (समाप्ति) इन 16 अथर्थों में नित्य अव्ययीभाव समास होता है।

| अव्यय का अर्थ | अव्यय पद | समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
|---|---|---|---|
| विभक्ति (इति) | अधि | हरौ इति | अधिहरि (हरि में) |
| | | आत्मनि इति | अध्यात्मम् (आत्मा में) |
| | | गोपि इति | अधिगोपम् (गोप में) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| समीप | उप | गड्गायाः समीपम् | उपगड्ड्गम् (गड्गा नदी के समीप) |
| | | नगरस्य समीपम् | उपनगरम् (नगर के समीप) |
| | | कृष्णस्यसमीपम् | उपकृष्णम् (कृष्ण के समीप) |
| | | कूलस्य समीपम् | उपकूलम् (किनारे के समीप) |
| | | तटस्य समीपम् | उपतटम् (तट के समीप) |
| समृद्धि | सु | मद्राणां समृद्धिः | सुमद्रम् (मद्र देशवासियों की समृद्धि |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | भिक्षाणां समृद्धिः | सुभिक्षम् (भिक्षाटन की समृद्धि |
| व्यृद्धि (वृद्धि का अभाव) | दुर् | यवनानां व्यृद्धिः | दुर्यवनम् (यवनों की दुर्गति) |
| | | भिक्षाणां व्यृद्धिः | दुर्भिक्षम् (भिक्षा का न मिलना) |
| | | शकानां व्यृद्धिः | दु:शकम् (शकों की दुर्गति) |
| | | राक्षसाणां व्यृद्धिः | दुर्राक्षसम् (राक्षसों की अवनति) |
| अर्थाभाव | निर् | मक्षिकाणाम् अभावः | निर्मक्षिकम् (मक्खियों का अभाव) |
| | | प्राणानाम् अभावः | निष्प्राणम् (प्राणों का अभाव) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | विघ्नानाम् अभावः | निर्विघ्नम् (विघ्नों का अभाव) |
| | | जनानाम् अभावः | निर्जनम् (मनुष्यों का अभाव) |
| | | दोषाणाम् अभावः | निर्दोषम् (दोषों का अभाव) |
| अत्यय (नष्ट होना) | अति | हिमस्य अत्ययः | अतिहिमम् (हिम का नाश) |
| | | रोगस्य अत्ययः | अतिरोगम् (रोग का नाश |
| | | शीतस्य अत्ययः | अतिशीतम् (शीतलता का नाश) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| असम्प्रति (अव युक्त न होना) | अति | निद्रा सम्प्रति न युज्यते | अतिनिद्रम् (इस समय नींद उचित नहीं) |
| | | स्वप्नः सम्प्रति न युज्यते | अतिस्वप्नम् (इस समय स्वप्न उचित नहीं) |
| | | कम्बलं सम्प्रति न युज्यते | अतिकम्बलम् (इस समय कम्बल उचित नहीं) |
| शब्दप्रादुर्भाव (शब्द का प्रकाश) | इति | हरिशब्दस्य प्रकाशः | इतिहरि ('हरि' शब्द का प्रकट होना) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | विष्णुशब्दस्य प्रकाशः | इतिविष्णु ('विष्णु' शब्द का प्रकट होना) |
| | | पाणिनिशब्दस्य प्रकाशः | इतिपाणिनि ('शब्द' का प्रकट होना) |
| | | ज्ञानशब्दस्य प्रकाशः | इतिज्ञानम् ('ज्ञान' शब्द का प्रकट होना) |
| पश्चात् | अनु | विष्णोः पश्चात् | अनुविष्णु (विष्णु के पीछ |
| | | रामस्य पश्चात् | अनुरामम् (राम के पीछे) |
| | | रथस्य पश्चात् | अनुरधम् (रथ के पीछे) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | शिष्यस्य पश्चात् | अनुशिष्यम् (शिष्य के पीछे |
| | | गोपालस्य पश्चात् | अनुगोपालम् (गोपाल के पीछे) |
| यथा/ योग्यता | अनु | रूपस्य योग्यंम् | अनुरूपम् (रूप के योग्य) |
| | | गुणस्य योग्यम् | अनुगुणम् (गुण के योग्य) |
| वीप्सा (दोहरान/बारम्बारता | प्रति | अक्षम् अक्षम् प्रति | प्रत्यक्षम् (प्रत्यक्ष) |
| | | एकम् एकं एक प्रति | प्रत्येकम् (प्रत्येक) |
| | | गृहं गृहं प्रति | प्रतिगृहम् (घर:घर) |
| | | दिनं दिनं प्रति | प्रतिदिनम् (प्रतिदिन) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | अर्थम् अर्थ प्रति | प्रत्यर्थम् (प्रत्येक अर्थ) |
| पदार्थानतिवृत्ति (पदार्थ की सीमा में रहना) | यथा | शक्तिम् अनतिक्रम्य | यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार) |
| | | बलम् अनतिक्रम्य | ग्रथाबलम् (बल के अनुसार) |
| | | समयम् अनतिक्रम्य | यथासमयम् (समय के अनुसार) |
| | | बुद्धिम् अनतिक्रम्य | यथाबुद्धि (बुद्धि के अनुसार) |
| सादृश्य (समानता) | स (सह) | हरेः सादृश्यम् | सहरि (हरि की समानता) |
| | | रूपस्य सादृश्यम् | सरूपम् (रूप की समानता) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| आनुपूर्व्य (क्रमशः) | अनु | ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण | अनुज्येष्ठम् (ज्येष्ठ के क्रम से) |
| | | वर्णस्य आनुपूर्व्येण | अनुवर्णम् (वर्ण के क्रमानुसार) |
| यौगपद्य (एक साथ होना) | स (सह) | चक्रेण युगपत् | सचक्रम् (चक्र के साथ) |
| | | हर्षेण युगपत् | सहर्षम् (हर्ष के साथ) |
| सादृश्य (समान) | स (सह) | सदृशः सख्या | ससखि (मित्र के जैसा) |
| | | सदृशः वर्णेन | सवर्णम् (वर्ण के समान) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| सम्पत्ति | स (सह) | क्षत्राणां सम्पत्तिः | सक्षत्रम् (राजाओं की सम्पत्ति) |
| साकल्य (सम्पूर्णता) | स (सह) | तृणम् अपि अपरित्यज्य | सतृणम् (तिनके को भी छोड़े बिना।) |
| अन्त (समाप्ति तक) | स (सह) | अग्निग्रन्थपर्यन्तम् | साग्नि (अग्नि ग्रन्थ की समाप्ति तक पढ़ता है) |
| | | बालकाण्डपर्यन्तम् | सबालकाण्डम् (बालकाण्ड तक) |

सूत्रः नदाभ्यश्च (2/1/20)

वृत्तिः नदीभिः सह संख्या समस्यते।

सूत्रार्थः (नदीवाची शब्दों के साथ संख्यावाची शब्दों का समास होता है और वह अव्ययीभाव समास कहलाता हैं। संख्या का पूर्व प्रयोग होता है तथा यह समास नित्य होता है। हैं।)

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
| --- | --- |
| पञ्चानां गङ्गानां समाहारः | पञ्चगङ्गम् (पाँच गङ्गाओं का समूह) |
| द्वयोः यमुनयोः समाहारः | द्वियमुनम् (दो यमुनाओं का समूह) |
| सप्तानां नदानां समाहारः | सप्तनदम् (सात नदों का समूह) |
| सप्तानां गोदावरीणां समाहारः | सप्तगोदावरम् (सात गोदावरियों का समूह) |

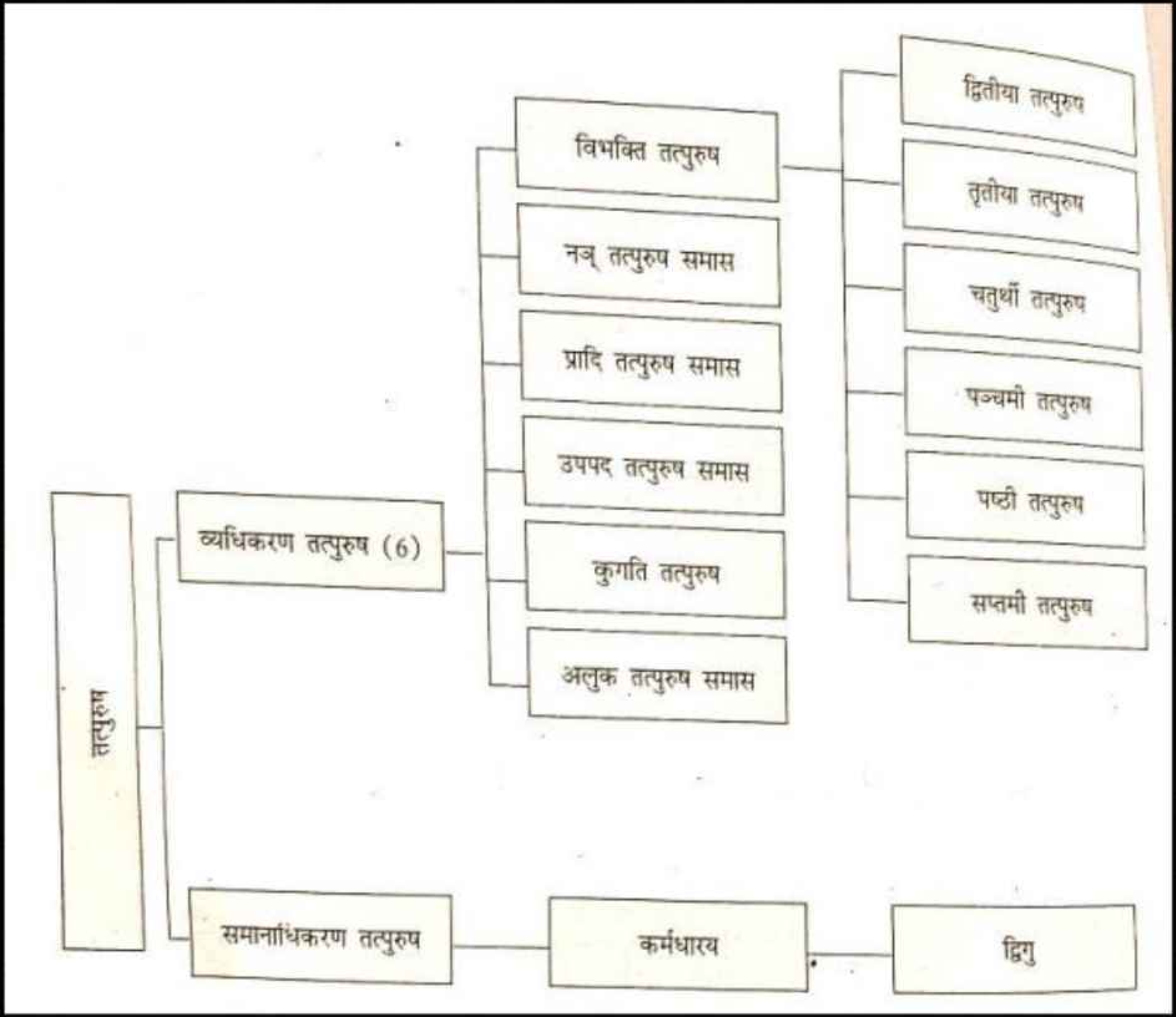
तत्पुरुष
व्यधिकरण तत्पुरुष (6)
विभक्ति तत्पुरुष
नञ् तत्पुरुष समास
प्रादि तत्पुरुष समास
उपपद तत्पुरुष समास
कुगति तत्पुरुष
अलुक तत्पुरुष समास
द्वितीया तत्पुरुष
तृतीया तत्पुरुष
चतुर्थी तत्पुरुष
पञ्चमी तत्पुरुष
षष्ठी तत्पुरुष
सप्तमी तत्पुरुष
समानाधिकरण तत्पुरुष
कर्मधारय
द्विगु

## व्यधिकरण तत्पुरुष

[वि + अधिकरण (वि विषम और अधिकरण विभक्ति)] तत्पुरुष समास में जहाँ समास विग्रह में पूर्वपद तथा उत्तर पद दोनों में अलग-अलग विभक्तियाँ हो, तो वह व्यधिकरण तत्पुरुष होता है। पूर्व पद में जो विभक्तियाँ लगी होती हैं, उनके आधार पर ही इस तत्पुरुष के प्रमुख भेद किए जाते हैं:

## द्वितीया तत्पुरुष समासः

**सूत्रः "द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः"**

**वृत्तिः** द्वितीयान्तं श्रितादिप्रकृतिकैः सुबन्तैः सह वा समस्यते स तत्पुरुषः

**सूत्रार्थः** द्वितीय विभक्ति वाले पूर्वपद के साथ प्रथमा विभक्ति वाले श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त एवं आपन्न शब्द प्राप्त होने पर द्वितीया तत्पुरुष समास होता है।

DSSSB TGT & PGT SCHOLAR BATCH संस्कृत

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
| --- | --- |
| कृष्णं श्रितः | कृष्णश्रितः (कृष्ण का आश्रय लिया हुआ) |
| शरणम् आगतः | शरणागतः (शरण में आया हुआ) |
| लोकम् अतीतः | लोकातीतः (लोक से परे) |
| भयम् आपन्नः | भयापन्नः (भय को प्राप्त) |
| रामम् आश्रितः | रामाश्रितः (राम के आश्रित) |
| सुखं प्राप्तः | सुखप्राप्तः (सुख को प्राप्त हुआ) |
| अश्वम् आरूढः | अश्वारूढः (घोड़े पर आरूढ) |
| स्वर्ग गतः | स्वर्गगतः (स्वर्ग को पार किया हुआ) |

| | |
|---|---|
| दु:खम् अतीत: | दु:खातीत: (दु:ख को पार किया हुआ) |
| कूपं पतित: | कूपपतित: (कुएँ में गिरा हुआ) |
| ग्रामं गत: | ग्रामगत: (गाँव को गया हुआ) |
| जीवनं प्राप्त: | जीवनप्राप्त: (जीवन को प्राप्त किया हुआ) |
| सुखम् आपन्न: | सुखापन्न: (सुख को पाया हुआ) |

## तृतीया तत्पुरुष समासः

**सूत्रः** "तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन" (2/1/30)

**वृत्तिः** तृतीयान्तं तृतीयान्तार्थकृतगुणवचनेनार्थेन च सह वा प्राग्वत्।

**सूत्रार्थः** वह तत्पुरुष समास जहाँ पूर्व पद में तृतीया विभक्ति हो तथा ऐसे तृतीयान्त सुबन्त पद तत्कृत (उसके द्वारा किए गए) गुणवाचक-शब्द के साथ तथा 'अर्थ' शब्द के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
| --- | --- |
| शंकुलया खण्डः | - शंकुलाखण्डः (सरौते से किया गया टुकड़ा) |
| धान्येन अर्थः | - धान्यार्थः (अन्न से प्रयोजन) |
| दानेन अर्थः | - दानार्थः (दान से प्रायोजन) |

**सूत्रः** "पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः" (2/1/31)

**वृत्तिः** पूर्व सदृश सम ऊनार्थ कलह निपुण मिश्र श्लक्ष्ण इत्येतैः सह तृतीयान्तं समस्यते, तत्पुरुषश्च समासो भवति।

**सूत्रार्थः** तृतीया विभक्ति वाले पूर्वपद के साथ प्रथमा विभक्ति वाले पूर्व, सदृश, सम, ऊन या इसके समानार्थी शब्द, कलह निपुण, मिश्र, श्लक्ष्ण आदि शब्द हो तो वहां तृतीया तत्पुरुष समास माना जाता है।

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
|---|---|
| मासेन पूर्वः | मासपूर्वः (महीने से पहले) |
| पित्रा सदृशः | पितृसदृशः (पिता के समान) |
| भ्रात्रा समः | भ्रातृसमः (भाई के बराबर) |
| मापेन ऊनम् | माषोणम् (मास भर कम) |
| ज्ञानेन हीनः | ज्ञानहीनः (ज्ञान से हीन) |
| ब्राचा कलहः | वाक्कलहः (बातचीत से झगड़ा) |
| आचारेण निपुणः | आचारनिपुणः (आचार से निपुण) |
| गुडेन मिश्रः | गुडमिश्रः (गुड से मिला हुआ) |

| | |
|---|---|
| आचारेण श्लक्ष्णः | आचारश्लक्ष्णः (आचरण मे सहज) |
| मात्रा सदृशः | मातृसदृशः (माता के समान) |
| नेत्राभ्याम् हीनः | नेत्रहीनः (नेत्रों से हीन) |
| घृतेन पक्वम् | घृतपक्वम् (घी से पकाया हुआ) |
| पादेन खञ्जः | पादखञ्जः (पैर से लँगड़ा) |

## पञ्चमी तत्पुरुष समासः

सूत्रः "पञ्चमी भयेन" (2/1/37)

वृत्तिः पञ्चम्यन्तं सुबन्तं भयशब्देन सुबन्तेन सह समस्यते विभाषा, तत्पुरुषश्च समासो भवति।

सूत्रार्थः पञ्चमी विभक्ति वाले पूर्वपद के साथ प्रथमा विभक्ति वाले भय (भय, भीति, भीत, भी) पदों के साथ चतुर्थी तत्पुरुष समास माना जाता है।

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
|---|---|
| वीरात् भयम् | चोरभयम् (चोर से डरा हुआ) |
| व्याघ्रात् भयम् | व्याघ्रभयम् (बाघ से डरा हुआ) |
| सिंहात् भीतः | सिंहभीतः (सिंह से भय) |
| वृकात् भीतिः | वृकभीतिः (भेड़िए से भय) |
| सर्पात् भीः | सर्पभीः (सर्प से डर) |
| राज्ञः भयम् | राजभयम् (राजा से डर) |

सूत्रः "अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरल्पशः" (2/1/38)

वृत्तिः अपेत-अपोढ-मुक्त-पतित-अपत्रस्त इत्येतैः सह पञ्चम्यन्तं समस्यते, तत्पुरुषश्च समासो भवति.

सूत्रार्थः पञ्चम्यन्त शब्दों का अपेत, अपोढ, मुक्त, पतित आदि पदों के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है।

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
|---|---|
| सुखात् अपेत: | सुखापेत: (सुख से रहित) |
| कल्पनाया: अपोढ़: | कल्पनापोढ: (कल्पना से शून्य) |
| बन्धनात् युक्त: | बन्धनमुक्त: (बंधन से मुक्त) |
| मार्गात् भ्रष्ट: | मार्गभ्रष्ट: (मार्ग से भ्रष्ट हुआ) |
| अश्वात् पतित: | अश्वपतित: (घोड़े से गिरा हुआ) |
| वृक्षात् पतित: | वृक्षपतित: (वृक्ष से गिरा हुआ) |
| स्वर्गात् पतित: | स्वर्गपतित: (स्वर्ग से पतित) |

## षष्ठी तत्पुरुष समास

सूत्रः "षष्ठी" (2/2/8)

वृत्तिः षष्ठ्यन्तं सुबन्तं समर्थेन सुबन्तेन सह समस्यते, तत्पुरुषश्च समासो भवति।

सूत्रार्थः षष्ठी विभक्ति वाले पूर्वपद के साथ-साथ प्रथमा विभक्ति वाले उत्तरपद का आपस में कोई संबंध स्थापित हो रहा हो तो वहाँ षष्ठी विभक्ति तत्पुरुष समास माना जाता है।

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
|---|---|
| राज्ञः सेवकः | राजसेवकः (राजा का सेवक) |
| प्रजायाः पतिः | प्रजापतिः (प्रजा का स्वामी) |
| नन्दस्य नन्दनः | नन्दनन्दनः (नन्द का नन्दन) |
| नराणां पतिः | नरपतिः (मनुष्यों का स्वामी) |
| विद्याः आलयः | विद्यालयः (विद्या का घर) |
| सीतायाः पतिः | सीतापतिः (सीता का पति) |
| राज्ञः पुरुषः | राजपुरुषः (राजा का पुरुष) |

| | |
|---|---|
| राज्ञः कुमारः | राजकुमारः (राजा का कुमार) |
| राज्ञः पुत्रः | राजपुत्रः (राजा का पुत्र) |
| राज्ञः माता | राजमाता (राजा की माता) |
| दशरथस्य पुत्रः | दशरथपुत्रः (दशरथ का पुत्र) |
| देवानां भाषा | देवभाषा (देवों की भाषा) |
| पशूनां पतिः | पशुपतिः (पशुओं का स्वामी) |
| पाठस्य शाला | पाठशाला (पठन का घर) |
| काल्याः दासः | कालिदासः (काली का दास) |

| | |
|---|---|
| गंगायाः जलम् | गंगाजलम् (गंगा का जलम्) |
| देवस्य मन्दिरम् | देवमन्दिरम् (देवों का मन्दिर) |
| हिमस्य आलयः | हिमालयः (हिम का घर) |
| देवस्य पूजा | देवपूजा (देव की पूजा) |
| रामस्य अनुजः | रामानुजः (राम का भाई) |
| ईश्वरस्य भक्तः | ईश्वरभक्तः (ईश्वर का भक्त) |
| राष्ट्रस्य पतिः | राष्ट्रपतिः (राष्ट्र का स्वामी) |

**सूत्रः "सप्तमी शौण्डे"** (2/1/40) तत्पुरुष सप्तमी

**वृत्तिः** सप्तम्यन्तं शौण्डाऽऽदिभिः सह संमस्यते, तत्पुरुषाश्च समासो भवति।

**सूत्रार्थः** सप्तमी विभक्ति वाले पूर्वपद के साथ प्रथमा विभक्ति वाले शौण्डादिगण (शौण्ड, धूर्त, चपल, निपुण, चतुर, पण्डित, प्रवीण, पटु, कुशल आदि) पठित शब्दों के साथ सप्तमी तत्पुरुष समास होता है

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
|---|---|
| अक्षेषु शौण्डः | अक्षशौण्डः (पासों मे चतुर) |
| कार्ये कुशलः | कार्यकुशलः (कार्य में कुशल) |
| रणे कुशलः | रणकुशलः (रण में कुशल) |
| मुनिषु श्रेष्ठः | मुनिश्रेष्ठः (मुनियों में श्रेष्ठ) |
| पुरूषेषु उत्तमः | पुरुषोत्तमः (पुरुषों में श्रेष्ठ) |
| गुरौ भक्तिः | गुरुभक्तिः (गुरु में भक्ति) |
| नरेषु उत्तमः | नरोत्तमः (नरो में श्रेष्ठ) |
| विद्यां प्रवीणः | विद्याप्रवीणः (विद्या में कुशल) |

## तत्पुरुष समास के उपभेद

**नञ् तत्पुरुष समासः**

**सूत्रः** "नञ्" (2/2/6)

**वृत्तिः** नञ् समर्थन सुबन्तेन सह समस्यते, तत्पुरुषश्च समासो भवति।

**सूत्रार्थः** 'नञ्' इस अव्यय का समर्थ सुबन्त के साथ समास होने पर नञ् तत्पुरुष समास होता है।

इस समास का समस्त पद बनाते समय नञ् के बाद व्यञ्जन वर्ण आने पर नञ् के स्थान पर 'अ' तथा स्वरवर्ण होने पर नञ् के स्थान पर 'अन्' हो जाता है।

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
| --- | --- |
| न कृतम् | अकृतम् (जो किया न हो) |
| न स्वस्थः | अस्वस्थः (बीमार) |
| न अश्वः | अनश्वः (घोड़ा नहीं) |
| न इच्छा | अनिच्छा (इच्छा न हो) |
| न आगत | अनागत (जो आया ना हो) |
| न गजः | अगजः (जो गज ना हो) |
| न उक्तः | अनुक्तः (जो उक्त न हो) |
| न मोघः | अमोघः (अव्यर्थ) |

| | |
|---|---|
| न सिद्धः | असिद्धः (असफल) |
| न ब्राह्मणः | अब्राह्मणः (अब्राह्मण) |
| न ईश्वरः | अनीश्वरः (जो ईश्वर न हो) |
| न अर्थः | अनर्थः (अनर्थ) |
| न उचितः | अनुचितः (जो उचित नहीं) |

सूत्रः कुगतिप्रादयः (2/2/18)

वृत्तिः कुगतिप्रादयः समर्थन शब्दान्तरेण सह नित्यं समस्यन्ते, तत्पुरुषश्च समासो भवति

सुत्रार्थ: कु अव्यय, गति संज्ञक तथा प्रादियों (प्र, पर, अप आदि उपसर्ग) का समर्थ शब्द के साथ तत्पुरुष समास होता है। अर्थात् जिस तत्पुरुष समास के पूर्वपद में कु आदि शब्द, ऊरी आदि गतिसंज्ञक शब्द, प्र आदि शब्द आएँ तो इनका समर्थ सुबन्तों के साथ नित्य समास होता है, ऐसे समास को कुगतिप्रादि तत्पुरुष समास कहते हैं।

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
|---|---|
| कुत्सित: पुत्र: | कुपुत्र: (बुरा पुत्र) |
| सुन्दर: देश: | सुदेश: (सुन्दर देश) |

| | |
|---|---|
| कुत्सितः पुरुषः | साहत) |
| कुत्सितः राजा | कुपुरूषः (निन्दित पुरूष) |
| प्रगतः आचार्यः | कुराजा (बुरा राजा) |
| विरुद्धः पक्षः | प्राचार्यः (श्रेष्ठ आचार्य) |
| शोभनः पुरुषः | विपक्षः (जो पक्ष में न हो) |
| प्रकृष्टो वीरः | सुपुरुषः (सुंदर पुरुष) |
| करी कृत्वा | प्रवीरः (प्रकृष्ट वीर) |
| अशुक्लं शुक्लं कृत्वा | ऊरीकृत्य (स्वीकार करके) |
| पटत् पटत् इति कृत्वा | शुक्लीकृत्य (सफेद करके) |

## उपपद तत्पुरुष समास

वृत्तिः उपपदं सुवन्तं समर्थेन नित्यं समस्यते।

सूत्रः- उपपदमतिङ् (2/2/19)

सूत्रार्थः कृदन्त सुबन्तों के साथ उपपदों का समास ही उपपदसमास कहलाता है इस समास में पूर्वपद उपपद तथा उत्तर पद कृत् प्रत्ययान्त समर्थ पद होता है। अर्थात् उपपद सुबन्त का तिङ् रहित धातु के साथ समास होता है।

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
|---|---|
| कुम्भं करोति इति | कुम्भकार: (कुम्हार) |
| धर्म जानाति इति | धर्मज्ञ: (जो धर्म जानता हो।) |
| सायं गायति इति | सामग: (जो सामवेद को जानता हो।) |
| आसने तिष्ठति इति | आसनस्थ: (जो आसन पर बैठता है।) |
| धन ददाति इति | धनद: (जो धन देता है।) |
| भारं हरति इति | भारहार: (भार ढोने वाला, कुली।) |
| दिनं करोति इति | दिनकर: (सूर्य) |
| शं करोति इति | शंकर: (महादेव) |

| | |
|---|---|
| भिक्षां चरति इति | भिक्षाचरः (भिखारी) |
| निशायां चरति इति | निशाचरः (रात्रि में विचरण करने वाला, राक्षस) |
| उरसा गच्छति इति | उरगः (छाती के बल चलने वाला, सांप) |
| विहायसा गच्छति इति | विहगः (आकाशमार्ग से चलने वाला, पक्षी) |
| पंके जायते इति | पंकजः (कमल) |
| मर्म जानाति इति | मर्मज्ञः (मर्म को जानने वाला) |
| कम्बलं ददाति इति | कम्बलदः (कम्बल देने वाला) |
| प्रभां करोति इति | प्रभाकरः (सूर्य) |

## अलुक् तत्पुरुष समास

'अलुक्' का अर्थ है 'न लुक्' अर्थात् विभक्ति का लोप का न होना। तत्पुरुष समास में जहाँ विभक्ति का लोप नहीं होता, उसे अलुक् तत्पुरुष समास कहते हैं।

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
|---|---|
| आत्मने पदम् | मनेपदम् (अपने लिए पद) |
| परस्मै पदम् | मैपदम् (दूसरे के लिए पद) |
| युधि स्थिरः | ष्ठिरः (युद्ध में स्थिर) |

आत्मनेपदम्
परस्मैपदम्
युधिष्ठिरः

| | |
|---|---|
| कृच्छ्रात् आगतः | छादागतः (कठिनाई से आया हुआ) |
| अभ्यासात् आगतः | |
| सरसि जातम् | यासादागतः (अभ्यास से आया हुआ) |
| खे चरति | सिजम् (तालाब में उत्पन्न) |
| वाचः पतिः | रः (आकाश में विचरण करने वाला पक्षी) |
| शरदि जायते | स्पतिः (बृहस्पति) |
| प्रावृषि जायते | देजः (शरद में होने वाला) |
| देवानां प्रियः | षिजः (बरसात में होने वाला) |

## समानाधिकरण तत्पुरुष (अ) (कर्मधारय) समास:

तत्पुरुष समास का ऐसा उदाहरण जहाँ पूर्वपद एवं उत्तरपद दोनों में समान विभक्ति (प्रथमा) लगी रहती है।) जब तत्पुरुष समास में दोनों पदों में समान विभक्ति का प्रयोग किया जाता है अर्थात् सामासिक विग्रह करने पर यदि दोनों पदों में समान विभक्ति हो तो (प्रथमा प्रथमा), वहाँ कर्मधारय समास होता है। कर्मधारय समास को समानाधिकरण तत्पुरुष समास भी कहते हैं।

**सूत्र:** तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः (1/2/42)

**वृत्ति:** तत्पुरुषः इति समासविशेषस्य संज्ञां वक्ष्यति। स तत्पुरुषः समानाधि करणपदः कर्मधारयसंज्ञो भवति

**सूत्रार्थ:** समान अधिकरण (विभक्ति) वाला तत्पुरुष कर्मधारय समास होता है। समानाधिकरण को 'समविभक्तिक' भी कह सकते हैं। कर्मधारय समास में दोनों पदों में प्रथमा विभक्ति होती है तथा इसमें लिंग का निर्धारण उत्तर पद के अनुसार होता है।

**सूत्र:** "विशेषणं विशेष्येण बहुलम्" (2/1/57)

**वृत्ति:** भेदकं समानाधिकरणेन भेडोन बहुलं प्राग्वत्।

सूत्रार्थ: विशेषण का विशेष्य के समानाधिकरण में कर्मधारय समास होता है अर्थात् विशेषण (विशेषता बताने वाले शब्द) वाची पदों का विशेष्य (जिस की विशेषता बताई जाए) वाची पदों के साथ कर्मधारय समास होता है।

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
|---|---|
| कृष्णः च असौ सर्पः | कृष्णसर्पः (काला सांप) |
| महान् चासौ देवः | महादेवः (महादेव) |
| महान् चासौ राजा | महाराजः (महान् राजा) |
| महान् चासौ आत्मा | महात्मा (महान् आत्मा) |
| श्रेष्ठः पुरुषः | श्रेष्ठपुरुषः (श्रेष्ठ पुरुष) |
| महान् चासौ पुरुषः | महापुरुषः (महान् पुरुष) |
| महान् चासौ ऋषिः | महर्षिः (महान् ऋषि) |
| महान् कविः | महाकविः (महान् कवि) |
| महान् चासौ रथी | महारथी (महान रथी) |

| | |
|---|---|
| महत् काव्यम् | महाकाव्यम् (महान काव्य) |
| नीलम् च तद् उत्पलम् | नीलोत्पलम् |
| नीलम् च तत् अम्बरम् | नीलाम्बरम् |
| श्वेतं च तत् वैस्वम् | श्वेतवस्त्रम् (सफेद वस्त्र) |
| रक्तम् च तद् अम्बरम् | रक्ताम्बरम् |
| गौरं च तद् मुखम् | गौरमुखम् |
| श्वेत: च असी अश्व: | श्वेताश्व: (सफेद घोड़ा) |
| उन्नत: वृक्ष: | उन्नतवृक्ष: |
| सुन्दर: च असी बालक: | सुंदरबालक: (सुंदर बालक) |
| मधुरं च तत्फलम् | मधुरफलम् (मधुर फल) |

| | |
|---|---|
| नील: च तद् आकाश: | नीलाकाश: (नीला आकाश) |
| रक्तं च तत् उत्पलम् | रक्तोत्पलम् (लाल कमल) |
| गीर: च असी बालक: | गौरबालक: (गोरा बालक) |
| वृद्धा दासी | वृद्धदासी |
| कृष्णं वसनम् | कृष्णवसनम् |
| बीर: पुरुष: | वीरपुरुष: |
| सुन्दर: बालक: | सुंदरबालक: |
| चपला स्वी | चपलस्त्री |
| उत्तम: जन: | उत्तमजन: |

सूत्रः "युवा खलतिपलितवलिनजरतीभिः" (2/1/67)

प्रथमा

वृत्तिः लिङ्ङ्गविशिष्टपरिभाषया युवतिशब्दोऽपि समस्यते।

सूत्रार्थः युवन् शब्द का खलति (गंजा), पलित (सफेद), वलिन (झुरी) और जरत् (वृद्ध के जैसे) के साथ कर्मधारय समास होता है। इसमें विशेष्य वाची युवन् शब्द का पूर्व प्रयोग होता है।

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
|---|---|
| युवा खलतिः | युवखलतिः (गंजा युवक) |
| युवा पलितः | युवपलितः (सफेद बालों वाला युवक) |
| युवा वलिनः | युववलिनः (झुर्रियों वाला युवक) |
| युवा जरत् | युवजरन् (जवान जो बुड्ढे की तरह लगे) |

## सूत्रः "वर्णो वर्णेन" (2/1/69)

**वृत्तिः** वर्णविशेषवाचि सुबन्तं वर्णविशेषवाचिना सुबन्तेन समानाधिकरणेन सह समस्यते, तत्पुरुषश्च समासो भवति।

**सूत्रार्थः** वर्णवाची शब्द का किसी अन्य वर्णवाची शब्द के साथ कर्मधारय समास होता हैं। (दोनों पद ही विशेषणवाची होते है।)

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
|---|---|
| कृष्णः श्वेतः | कृष्णश्वेतः (काला और सफेद) |
| रक्तः हरितः | रक्तहरितः (लाल और हरा) |
| कृष्णः सारङ्ङ्गः | कृष्णसारङ्गः (काला और चितकबरा) |
| नीलः लोहितः | नीललोहितः (नीला और लाल) |
| रक्तः कृष्णः | रक्तकृष्णः (लाल और काला) |

## सूत्रः- "उपमानानि सामान्यवचनैः" (2/1/55)

**वृत्तिः** उपमानवाचीनि सुबन्तानि सामान्यवचनैः सुबन्तैः सह समस्यन्ते, तत्पुरुषश्च समासो भवति।

**सूत्रार्थः** उपमानवाची पदों का गुणवाची शब्दों के साथ कर्मधारय समास होता है।

**उपमानः** किसी शब्द की जिसके साथ समानता बतायी जाती है उसे उपमान कहते हैं।

**उपमेय:** जिसको उपमा दी जाती है या जिसकी समानता बतायी जाती हैं उसे **उपमेय** कहते हैं।

यहाँ उपमानवाची शब्दों का पूर्वप्रयोग होता है तथा, उपमान पद के साथ 'इव' पद का प्रयोग होता है।

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
|---|---|
| घन इव श्यामः | घनश्यामः (घनश्याम) |
| चन्द्रः इव मनोहरः | चन्द्रमनोहरः (चाँद के समान मनोहर) |
| नवनीतम् इव कोमलम् | नवनीतकोमलम् (नवनीत के समान कोमल) |
| चन्द्रः इव उज्ज्वलः | चन्द्रोज्ज्वलः (चंद्रमा सा उज्ज्वल) |
| कर्पूरः इव गौरः | कर्पूरगौरः (कर्पूर के समान, गौर) |
| दुग्धम् इव धवलम् | - दुग्धधवलम् (दूध के समान सफेद) |

चन्द्रः इव मुखम् - चन्द्रमुखम् (चंद्रमा के समान मुख)

नरः शार्दुल इव - नरशार्दुलः (नरों में चीते के समान)

नरः सिंह इव - नरसिंहः (मनुष्य सिंह के समान)

चन्द्र इव आह्लादकः - चन्द्राह्लादकः (चंद्र के समान कोमल)

कमलम् इव कोमलम् - कमलकोमलम् (कमल के समान कोमल)

दुग्धम् इव धवलम् – दुग्ध धवलम् (दूध के सामान सफेद)

नीरदः इव श्यामः - नीरदश्यामः (बादल के समान काला)

**सूत्र: "उपमितं व्याघ्रादिभि: सामान्यप्रयोग" (2/1/56)**

**वृत्ति:** उपमेयं व्याघ्रादिभि: सह प्राग्वत्साधारणधर्मस्याप्रयोगे सति। विशेष्यस्य पूर्वनिपातार्थ सूत्रम्।

**सूत्रार्थ:** उपमेयवाची शब्दों का व्याघ्र, सिंह आदि उपमानवाची के साथ कर्मधारय समास होता है। यहाँ उपमेयवाची शब्द का पूर्व प्रयोग होता है।

| समास विग्रह | सामासिक पद |
| --- | --- |
| पुरुषः व्याघ्रः इव | पुरुषव्याघ्रः |
| पुरुषः सिंहः इव | पुरुषसिंहः |
| मुखं चन्द्रः इव | मुखचन्द्रः |
| करः किसलयैः इव | करकिसलयः |
| चरण कमलम् इव | चरणकमलम् |

## कर्मधारय का भेद द्विगु समास :

सूत्र: "संख्यापूर्वो द्विगुः" (2/1/52)

वृत्तिः इत्यत्र यः संख्यापूर्वः समासः स द्विगुसंज्ञो भवति।

सूत्रार्थः कर्मधारय समास का वह उदाहरण जिसके पूर्व में संख्यावाची शब्द हो तो वहाँ द्विगु समास होता है।

यह समास सदैव समाहार अर्थ में होता है। पात्र, भुवन, युग, लवण, मूल इन पाँच पदों के साथ संख्या होने पर समस्तपद नपुंसकलिङ्ङ्ग

एकवचन में होता है तथा अन्य शब्दों में समस्त पद को 'ङिप्' प्रत्यय कर स्त्रीलिङ्ङ्ग में प्रयुक्त किया जाता है।

| समास विग्रह | सामासिक पद (अर्थ सहित) |
| --- | --- |
| पञ्चानां गवां समाहारः | पञ्चगवम् (पाँच गायों का समूह) |
| पञ्चानां वटानां समाहारः | पञ्चवटी (पाँच वृक्षों का समूह) |
| पञ्चानां पात्राणां समाहारः | पञ्चपात्रम् (पाँच पात्रों का समूह) |
| पञ्चानां अमृतानां समाहारः | पञ्चामृत् (पाँच अमृतों का समूह) |

| | |
|---|---|
| पञ्चानां दिनानां समाहारः | पञ्चदिनम् (पाँच दिनों का समूह) |
| त्रयाणां लोकानां समाहारः | त्रिलोकी (तीन लोकों का समाहार) |
| त्रयाणां भुवनानां समाहारः | त्रिभुवनम् (तीन भुवनों का समाहार) |
| चतुर्णां फलानां समाहारः | चतुष्फलम् (चार फलों का समाहार) |
| अष्टानाम् अध्यायानाम् समाहारः | अष्टाध्यायी (आठ अध्यायों का समाहार) |
| त्रयाणां फलानां समाहारः | त्रिफला (तीन फलों का समाहार) |
| शतानाम् अब्दानां समाहारः | शताब्दी (सौ वर्षों का समूह) |

चतुर्णां भुजानां समाहारः चतुर्भुजम् (चार भुजाओं का समूह)

तिसृणां वेणीनां समाहारः त्रिवेणी (तीन वेणियों का समूह)

चतुर्णां युगानां समाहारः चतुर्युगम् (चार युगों का समूह)

सप्तानां शतानां समाहारः सप्तशती (सात सैकड़ों का समूह)

सप्तानां अह्नाम् समाहारः सप्तशती (सात सैकड़ों का समूह)

नवानां रात्रीणां समाहारः सप्तशती (सात सैकड़ों का समूह)

तत्पुरुष

↓

① व्यधिकरण तत्पुरुष (द्वितीया - सप्तमी)

② समानाधिकरण तत्पुरुष (कर्मधारय) → द्विगु

③ नञ् तत्पुरुष

④ कुगति तत्पुरुष

⑤ उपपद तत्पुरुष

⑥ अलुक् तत्पुरुष

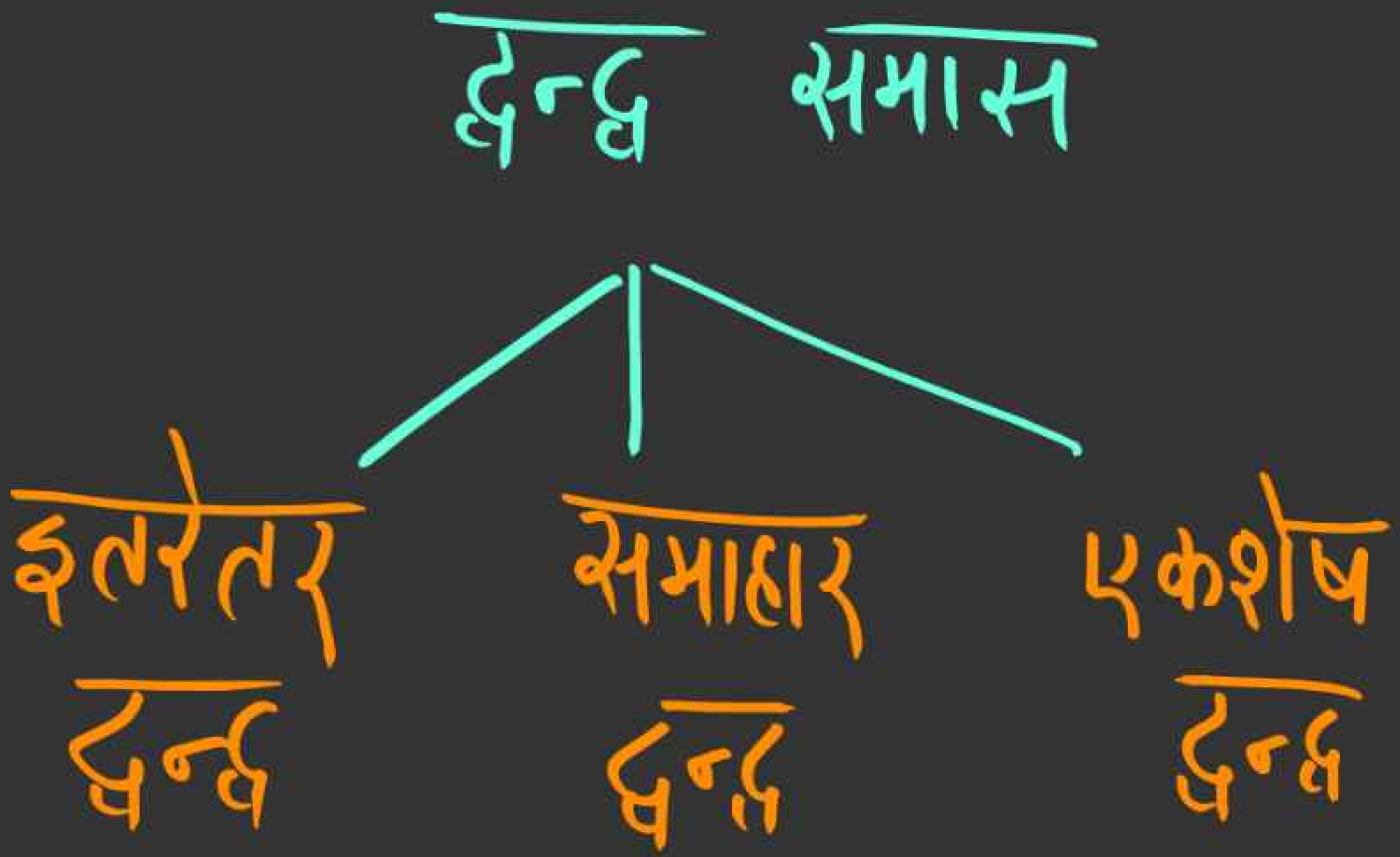
द्वन्द्व समास
इतरेतर द्वन्द्व
समाहार द्वन्द्व
एकशेष द्वन्द्व

# बहुव्रीहि: समास

- समानाधिकरण
- व्याधिकरण